B.Com.(HONS)
P1 – AICS (HONS)
Paper – I
FINANCIAL ACCOUNTING

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

Date – 20.5.2020.

UNIT – I

TOPIC – PRINCIPLES OF ACCOUNTING
लेखांकन सिद्धान्त

आधुनिक व्यवसाय अपने आकार से बड़ा और जटिल हो गया है. व्यवसाय में उसके मालिक के स्वभाव के अतिरिक्त अन्य वर्गों का भी हित होता है. इन वर्गों में ऋणदाता, विनियोग-अभावी वर्गों का भी हित होता है. इन वर्गों में ऋणदाता, विनियोजक, कर्मचारी, ग्राहक, सरकार एवं अर्थशास्त्री को शामिल किया गया है. अतः लेखांकन का उद्देश्य केवल लाभ या हानि बताने तक ही सीमित न हो, बल्कि अपनी वित्तीय स्थिति का प्रदर्शन इस प्रकार करें कि विभिन्न वर्गों को उनकी इच्छानुसार सूचना प्राप्त हो सके. इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि लेखांकन के सिद्धांतों, भाषा एवं शब्दावली को प्रमाणित किया जाए. ताकि विभिन्न व्यवसायों एवं क्षेत्र के लेखांकन में समरूपता स्थापित हो सके.

लेखांकन वास्तव में ज्ञान की नियमबद्ध, क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित शाखा है जो कि कारण और परिणाम के बीच संबंध स्थापित करती है. इसके कुछ अपने स्थापित एवं प्रमाणित सिद्धान्त, भाषा, शब्दावली एवं मान्यतायें व परम्परायें हैं जिसका हम सविस्तार विचार करेंगे

लेखांकन सिद्धांतों को मुख्यतः तीन वर्गों में बांटा गया है! —

(1) लेखांकन की आधारभूत संकल्पनायें (Basic Assumptions of Accounting)
(2) लेखांकन के आधारभूत सिद्धान्त (Basic Principles of Accounting.)
(3) लेखांकन के परिवर्तनशील सिद्धान्त (Modifying Principles of Accounting)

Scanned with CamSc

(1) लेखांकन की आधारभूत संकल्पनाएँ :— वित्तीय लेखांकन के सिद्धांत और व्यवहार में निहित प्रारम्भिक विचार ही लेखांकन की आधारभूत संकल्पनाएँ हैं. ये संकल्पनाएँ लेखांकन की गतिविधियों के व्यावसायिक नियम हैं जो कि पेशेवर लेखाकारों के द्वारा विकसित व स्वीकृत हैं. इसके अंतर्गत मुख्यतः चार आधार संकल्पनाओं को शामिल किया गया है !—

(a) लेखांकन इकाई संकल्पना (Accounting Entity Assumption) :— लेखांकन के अनुसार व्यवसाय के अस्तित्व को व्यवसायी से अलग माना जाता है. अर्थात् व्यवसाय को एक अलग इकाई माना जाता है. अतः लेखांकन का संबंध व्यवसायी से न लेकर व्यवसाय से होता है. इस संकल्पना के आधार पर ही व्यवसायी द्वारा व्यवसाय में लगायी गयी पूँजी को व्यवसाय की दृष्टि से दायित्व (Liabilities) माना जाता है. परिणामतः व्यवसाय द्वारा पूँजी पर ब्याज का भुगतान किया जाता है. ठीक इसके विपरीत जब व्यवसायी व्यवसाय से निजी उपभोग के लिये राशि (आहरण) निकालता है तो उस पर ब्याज लिया जाता है.

अतः सभी व्यावसायिक इकाइयाँ, व्यापारिक सौदों के लेखांकन में अनिवार्य रूप से व्यावसायिक इकाई संकल्पना को अपनाती हैं.

(b) मुद्रा मापन की संकल्पना (Money Measurement Assumption) :— इस संकल्पना के अनुसार लेखांकन में केवल उन्हीं सौदों का लेखा किया जाता है जो वित्तीय स्वभाव के होते हैं अर्थात् इनके मूल्य को मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जा सके. खातों में जो कॉलम प्रयोग किया जाता है उसमें राशि (₹) ही लिखा जाता है न कि लीटर, मीटर या किलोग्राम का प्रयोग किया जाता है. मुद्रा के रूप में व्यक्त करना सौदों को अर्थपूर्ण बना देता है.

इस प्रकार इस संकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि लेखांकन में हम व्यापार के गुणात्मक एवं भावनात्मक तथ्यों का लेखा नहीं करते हैं.

Scanned with CamSc

(c) व्यावसायिक इकाई के जारी रहने की संकल्पना (Business Going Concern Assumption) :→ इस संकल्पना के अनुसार लेखांकन करते समय यह मान लिया जाता है कि व्यापार अनन्त काल तक चलता रहेगा, इसकी गतिविधियाँ भविष्य में चलती रहेंगी - जब तक कि व्यापार का समापन न हो या दिवालिया न हो। यही कारण है कि व्यवसाय में दीर्घकालीन उपयोग के लिये भूमि, भवन, मशीन, आदि स्थायी सम्पत्तियों का क्रय किया जाता है। इन सम्पत्तियों पर प्रतिवर्ष ह्रास की व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त व्यवसाय के नियोजन, संगठन व कर्मचारी प्रबंधन से भी इस संकल्पना की पुष्टि होती है।

इस प्रकार जब तक व्यवसाय का जीवन काल स्पष्ट रूप से पूर्व निश्चित न हो, हम व्यवसाय को अनन्त काल तक जारी रहने वाली इकाई मानते हैं।

(d) लेखांकन अवधि की संकल्पना (Accounting Period Assumption) :→ यह सत्य है कि व्यवसाय की वास्तविक उपलब्धि का अनुमान उसके अंत पर ही लगाया जा सकता है। व्यवसाय का जीवन काल अनिश्चित होने के कारण उसके अंत की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। अतः यही कारण है कि जीवन काल को छोटी अवधि में विभाजित किया गया जिसे एक वर्ष के रूप में माना गया।

एकाकी व्यापार व साझेदारी व्यापार में लेखांकन अवधि अपनी सुविधानुसार लेकिन दो लेखा वर्ष के बीच की अवधि का अंतर 12 माह से अधिक नहीं होना चाहिए। इसलिए ये कैलेण्डर वर्ष - 1 जनवरी से 31 दिसम्बर, दीपावली से दीपावली, आदि मान सकते हैं, लेकिन कंपनी के लिए वैधानिक रूप से अनिवार्य बना दिया गया है कि उनका लेखा वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होकर अगले वर्ष के 31 मार्च को समाप्त माना जाएगा। अर्थात् वित्तीय वर्ष को ही लेखा वर्ष माना जाएगा। —

Scanned with CamScanner

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि व्यापारिक सौदों का लेखांकन और उनका सही रिपोर्ट देने के लिये यह अनिवार्य है कि प्रत्येक व्यवसाय अपनी लेखा पुस्तकों के तैयार करने में व्यवसायिक इकाई संकल्पना, व्यवसाय के चालू रहने, मुद्रा माप एवं लेखावर्ष के सिद्धांतों का पालन अवश्य करें. ये संकल्पनाएँ लेखांकन की आधार स्तंभ है. प्रत्येक स्तम्भ इतना महत्वपूर्ण है कि किसी भी अनुपस्थिति लेखांकन की संरचना को पंगु बना देगी. अतः ये संकल्पनाएँ सही, सच्ची, शुद्ध और परीक्षणीय लेखांकन के लिये अनिवार्य है।